

विचार बिन्दु

निरन्तर बदलने की इच्छा रखना एक ताकत होती है, चाहे इसकी वजह से कंपनी का एक बड़ा हिस्सा कुछ देर के लिए पूरी तरह से अव्यवस्थित क्यों ना हो जाए। -जैक वेल्स

प्लास्टिक उपयोगी, किन्तु उसका कचरा गंभीर समस्या बना

प्लास्टिक का लगभग एक सदी पहले आविष्कार हुआ। उसके बाद से, प्लास्टिक हमारे जीवन के हर पहलू में प्रवेश करता चला गया है। इस टिकाऊ, हल्के वजन वाले अत्यंत बहुमुखी पदार्थ के साथ के बिना कुछ मिनिट भी चलना हमारे लिये आज मुश्किल है। पश्चिम में विज्ञान के एक विद्यार्थी ने पिछले दिनों एक अनोखा प्रयोग किया। उसने तय किया कि वह 24 घंटे तक पूरी तरह से प्लास्टिक के बिना रहने की कोशिश करेगा और प्लास्टिक की बनी किसी भी चीज को वह नहीं छूएगा। वह विद्यार्थी यह देखने और जानने का प्रयास कर रहा था कि हम प्लास्टिक के किस सामान के बिना बिल्कुल भी नहीं रह सकते हैं, और प्लास्टिक की वे कौन सी चीजें हैं जिन्हें हम छोड़ सकते हैं। सभी सामान्य लोगों की तरह वह भी रोजाना सुबह उठने के तुरंत बाद अपना स्मार्टफोन चेक करता था, संदेशों देखता था। अपने लिये नियत प्लास्टिक-विहीन दिन के लिए उसने अपना सेलफोन पहले ही अलमारी में रख दिया क्योंकि सेलफोन हाथ में कैसे ले? उसके बत में यह संभव नहीं था क्योंकि एल्यूमीनियम, लोहे, लिथियम, और तांबे के अलावा प्रत्येक स्मार्टफोन में प्लास्टिक भी होता है। उसने अपने आप को बहुत हल्का पाया। हालांकि फोन तक उसकी पहुंच न होने से वह शुरू में थोड़ा अस्त-व्यस्त जरूर हुआ। लेकिन साथ ही उसने अपने आप को खुला हुआ या बंधन मुक्त भी महसूस किया। प्लास्टिक स्पर्स-विहीन दिन की सुबह उठ कर वह बाथरूम की तरफ जाने लगा मगर उसके अंदर जाने से पहले उसे रुकना पड़ा। बाथरूम का दरवाजा ही प्लास्टिक का बना था। वह अपने नियमित दूधपत्र, दूधब्रश और तरल साबुन का उपयोग भी नहीं कर सकता था, जो सभी प्लास्टिक के पैक में थे या प्लास्टिक से बने थे। इस प्रकार उसने अगले 24 घंटों में पाया कि प्लास्टिक से पूरी दूरी बनाये रखना आज के इंसान के लिये नामुमकिन है।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि प्लास्टिक ने हमारे लिये हजारों आधुनिक सुविधाओं को संभव बनाया है और उनके बिना हमारा गुजारा नहीं हो सकता। लेकिन इसके अनेक नुकसान भी हैं, खासकर पर्यावरण के लिए, यह भी सब जानते हैं। प्लास्टिक का उपयोग समस्या नहीं है। हम प्लास्टिक का उपयोग तो जीवन के हर क्षेत्र में करते हैं किन्तु उसके कचरे से निबटना हमारे लिये मुश्किल होता जा रहा है। इसका कारण है प्लास्टिक का प्राकृतिक रूप से नष्ट न होना। जिस प्रकार अन्य चीजें मिट्टी में मिल जाती हैं उस प्रकार प्लास्टिक नष्ट नहीं होता। प्लास्टिक के परमाणुओं के बीच बंधन इतना मजबूत होता है कि उसे खत्म करना मुश्किल होता है। अगर नष्ट करने के लिए इसे जलाया जाता है तो उससे अत्यंत हानिकारक विषैले रसायनों का उत्सर्जन होता है। उसे जमीन में गाड़ दिया जाय तो हजारों साल दबा रह कर भी वह विखंडित नहीं होगा। अधिक से अधिक धरती के ताप से वह छोटे-छोटे कणों में टूट जाएगा किन्तु पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होगा। अगर उसके कचरे को समुद्र में डाल दिया जाय तो वह वहां भी समय के साथ छोटे-छोटे टुकड़ों में खंडित होकर उसके पानी को प्रदूषित करता रहेगा और समुद्री जीवों को नुकसान पहुंचाता रहेगा। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में हर साल लगभग 400 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक का कचरा पैदा होता है। अंदर फोम वाले टेकआउट कंटेनर, पेन, कप, अमेर्जन पैकेज और निश्चित रूप से कैरी-बैग का हम भरपूर उपयोग करते हैं। दुनिया में प्लास्टिक से बने वाले सामानों में से लगभग आधे सिर्फ एक बार प्रयोग करने के बाद फेंक दिये जाते हैं। इसे हम यूज एण्ड थ्रो कहते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि, हम एक बार इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक उत्पादों के जबरदस्त आदी हो गए हैं। मगर अब इसके गंभीर पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी परिणाम सामने आ रहे हैं। बेशक, प्लास्टिक के बिना

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायर्नमेंटल हेल्थ साइंसेज के अनुसार, कुछ प्लास्टिक एडिटिव्स - जैसे कि बीपीए और फाथेलेट्स - मनुष्यों में अंतःस्त्रावी तंत्र को बाधित कर सकते हैं। मानव शरीर पर इसके चिंताजनक प्रभावों में व्यवहार संबंधी समस्याओं के अलावा पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर कम हो जाने और महिलाओं में थायरॉयड हार्मोन का स्तर कम हो जाने तथा समय से पहले बच्चे का जन्म भी शामिल है।

काम में लेकर फेंक देने वाली वस्तुओं से। पृथ्वी नीति संस्थान का अनुमान है कि लोग हर साल एक ट्रिलियन सिंगल-यूज प्लास्टिक बैग का उपयोग करते हैं।

पिछली सदी के नौवें दशक में प्लास्टिक उद्योग में एक कैच लाइन चलती थी प्लास्टिक इसे संभव बनाते हैं जो आज भी सच लगती है। प्लास्टिक ने हमारी दुनिया में कब प्रवेश किया, इस पर कुछ बहस है। कई लोग इसका आविष्कार 1855 में बताते हैं जब एक ब्रिटिश धातु विज्ञानी अलेक्जेंडर पार्क्स ने कपड़े के लिए जलरोधक कोटिंग के रूप में थर्मोप्लास्टिक सामग्री का पेटेंट कराया था। उसने नये पदार्थ को 'पार्क्सिन' कहा। अगले दशकों में, दुनिया भर में प्रयोगशालाओं ने उसके अनेक रूप और प्रकार विकसित कर दिये। मगर सभी का रसायन शास्त्र समान था। वे सभी परमाणुओं की बहुलक श्रृंखलाएँ हैं, और वे अधिकांश पेट्रोलियम या प्राकृतिक गैस से बने होते हैं। उनमें मिलाये जाने वाले रसायनों के कारण प्लास्टिक अन्वयों से बेतहाशा भिन्न होते हैं। वे अपारदर्शी, पारदर्शी, झगदार या कठोर, खिंचाव वाले या भंगुरशील भी हो सकते हैं। उन्हें पॉलिएस्टर और स्टायोफोम सहित कई नामों से जाना जाता है, और पीवीसी और पीईटी जैसी आभूषण से भी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्लास्टिक निर्माण में तेजी आई क्योंकि वह युद्ध के प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण था। उसने नायलॉन के पैराशूट, प्लेक्सिग्लास, विमान की खिडकियाँ जैसी सुविधाएँ दी। युद्ध के बाद प्लास्टिक के उत्पादन में और बड़ा उछाल आया। प्लास्टिक फॉर्मिका कार्बेट, रेफ्रिजरेटर लाइनर्स, कार के पुर्जों, कपड़े, जूते आदि। वह उत्पाद जिसे कुछ समय के लिए इस्तेमाल करने के वास्ते डिजाइन किया गया था, सभी प्रकार की चीजों में चला गया। हालात ने करवट तक ली जब प्लास्टिक सिंगल-यूज सामान में उपयोग में लिया जाने लगा और प्रीफैब कूड़े के ढेर लगने लगे। यहीं से हम मुश्किल में पड़ने शुरू हुए। स्ट्रॉ, कप, बैग और अन्य उत्पादों के कचरे ने पर्यावरण के लिए विनाशकारी परिणाम पैदा किए हैं। हम अपने शहरों में पाते हैं कि सड़कों पर बिखरा अधिकांश कचरा प्लास्टिक का ही होता। खास कर प्लास्टिक की थैलियाँ। उधर यू चैरिटेबल ट्रस्टों के एक अध्ययन के अनुसार, हर साल 11 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक प्लास्टिक महासागरों में प्रवेश करता है, पानी में रिसता है, खाद्य श्रृंखला को बाधित करता है और समुद्री जीवन का दम चोटता है।

ऑर्गेनाइजेशन फॉर इकोनॉमिक कोऑपरेशन एंड डेवलपमेंट के अनुसार प्लास्टिक कचरे का लगभग पांचवां हिस्सा जल जाता है और हवा में कार्बनडाईऑक्साइड छोड़ता है। यह संगठन यह भी रिपोर्ट करता है कि केवल नौ प्रतिशत प्लास्टिक का पुनर्जीवीकरण किया जाता है। प्लास्टिक को रिसाइकल करना किफायती नहीं है, और जब रिसाइकल किया जाता है तो उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है। प्लास्टिक हमारे स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचा सकता है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायर्नमेंटल हेल्थ साइंसेज के अनुसार, कुछ प्लास्टिक एडिटिव्स - जैसे कि बीपीए और फाथेलेट्स - मनुष्यों में अंतःस्त्रावी तंत्र को बाधित कर सकते हैं। मानव शरीर पर इसके चिंताजनक प्रभावों में व्यवहार संबंधी समस्याओं के अलावा पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन का स्तर कम हो जाने और महिलाओं में थायरॉयड हार्मोन का स्तर कम हो जाने तथा समय से पहले बच्चे का जन्म भी शामिल है। माइक्रोप्लास्टिक, उपभोक्ता उत्पादों और औद्योगिक कचरे के निपटारे और उसे तोड़ने के परिणामस्वरूप हमारे वातावरण में प्लास्टिक के बेहद छोटे-छोटे टुकड़ों का कण हर जगह फैले हुए हैं। हम जो पानी पीते हैं, जिस हवा में हम सांस लेते हैं, और महासागरों में हर कहीं प्लास्टिक के कण विद्यमान होते हैं। वे अन्य चीजों के अलावा, खराब प्लास्टिक कूड़े से आते हैं।

प्लास्टिक की इस समस्या का समाधान पूरी तरह से उपभोक्ताओं के कंधों पर नहीं डाला जा सकता है। हमें इस पर सभी मोर्चों पर काम करने की जरूरत है। समझदार लोगों का कहना है कि इस समस्या पर समग्रता से ध्यान देने की जरूरत है। प्लास्टिक समस्या भी है और उपयोगी भी है। यह प्रगति की समस्या भी है। प्लास्टिक से दुश्मनी की बात नहीं है। दुश्मनी उसके एकल उपयोग से हो तो बेहतर है। किसी चीज को एक बार इस्तेमाल करके फेंक देने की संस्कृति की बात है। इसीलिए दुनिया भर में ऐसे प्लास्टिक के उपयोग को कम से कम करने की कोशिश की जा रही है जो दोबारा इस्तेमाल में न आ सके। केंद्र सरकार ने एकबारीय उपयोग वाले प्लास्टिक पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया हुआ है। मगर हम अपने चारों तरफ उसका कोई असर नहीं देख रहे हैं। राज्य सरकार को सबसे अधिक आमुदनी शराब की विक्री से मिलने वाले आबकारी वाले कर से होती है। संविधान के निर्देश के अनुरूप तो सरकार को शराब को बंद करना चाहिए मगर ऐसा नहीं होता। अब सरकार शराब को प्लास्टिक की बोतलों व पाउच में पैक करने की भी अनुमति देने लगी है। ऐसा करके वह प्लास्टिक के कचरे में ही इजाफा करती है बल्कि नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए संविधान के दिशानिर्देशों की भी अनदेखी करती है।

- अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)



प्रो. कैलाश सोडानी

आज कल देश में घटित घटनाक्रम पर चर्चा के दौरान मेरे एक मित्र ने एक सटीक दृष्टान्त सुनाया। महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। द्रुपद का सबसे महान योद्धा भीष्मपितामह शरशय्या पर अपने जीवन की अंतिम रात्रि व्यतीत करते हुए सूर्य के उत्तरायण की प्रतीक्षा कर रहा था। संभवतया धरा छोड़ने से पहले उनके मन में इस युद्ध को लेकर जो कुछ भ्रम एवं प्रश्न थे उन्हें दूर करने के लिए अंतिम समय में श्री कृष्ण से संबाद आवश्यक समझ रहे थे। सौभाग्य से उसी समय श्री कृष्ण का आगमन

होता है और वो भीष्मपितामह को प्रणाम करते हैं।

भीष्म बोले- एक बात बताओ कन्हैया। इस युद्ध में जो कुछ हुआ, क्या वह ठीक था? कौरवों के कृत्यों पर चर्चा करने का तो अब कोई अर्थ नहीं है। परन्तु क्या पांडवों की ओर से जो हुआ वह सही था? जैसे आचार्य द्रोण का वध, दुर्योधन की जंघा के नीचे प्रहार, दुःशासन की छाती का चीरा जाना, निहत्ये कर्ण का वध, क्या यह सब उचित एवं नैतिक था?

श्री कृष्ण ने कहा- कुछ भी अनुचित एवं अनैतिक नहीं हुआ है पितामह। वही हुआ जो होना चाहिए था। जब क्रूर और अनैतिक शक्तियाँ सत्य और धर्म का समूल नाश करने के लिए आगे बढ़ती हैं तो नैतिकता अर्थहीन हो जाती है पितामह। तब महत्वपूर्ण होती है विजय, केवल विजय। कंस, जरासंध, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनी जैसे घोर पापियों की सप्तापि के लिए हर छल उचित है। पाप का अंत आवश्यक है, वह चाहे जिस विधि से किया जावे। निःसन्देह इतिहास से शिक्षा ली जानी चाहिए पितामह। परन्तु निर्णय वर्तमान

परिस्थितियों के आधार पर ही लेना चाहिए तभी विजय को सुनिश्चित किया जा सकता है। पापियों के समाप्ति नैतिकता का पाठ करना आत्मघाती होता है।

मैं किस विषय पर क्या कहना चाहता हूँ आप समझ चुके हैं। आजकल प्रजातंत्र के तथाकथित शुभचिंतकों एवं लुटियंस के पाँच सितारा वातावरण में कलम चलाने वाले पत्रकार बन्धुओं को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। पिछले तीस वर्षों से अतीक के आतंक पर जिनकी कलम नहीं चली, प्रजातंत्र के प्रखर प्रवक्ताओं ने कभी आवाज उठाने की जहमत नहीं उठाई। आज उन सभी के घरों में मातम छाया हुआ है। इस प्रकार की मौत पर आँसू बहा रहे हैं। पुलिस और सरकार को कटघरे में खड़ा कर रहे हैं। अब तक उत्तर प्रदेश का आम नागरिक इन माफियाओं के आतंक, अत्याचार एवं अपमान के साये में जीने के लिए मजबूर था। आतंक की पराकाष्ठा देखिये कि लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में मतदान गुप्त होते हुए भी माफिया ब्रदर्स विधानसभा एवं लोकसभा में पहुँच जाते थे। न्यायाधीश भी जिनके मुकदमों की सुनवाई के लिए

मना करते रहे हैं। बेचारे गवाहों की तो कोई ओकात ही नहीं है। जेल फाइव स्टार सुविधाओं के साथ इनका जूसुरक्षित सरकारी आवास है। आई.ए.एस. एवं आई.पी.एस. अधिकारी माफियाओं के ड्राइंगरूम में बैठकर चाय पीने और इनके साथ बैडमेन्ट/टेबल टेनिस खेलने में गर्व का अनुभव करते हैं। ऐसे भयभीत पूर्ण वातावरण में आम नागरिक कैसे जी रहा होगा, हम सोच सकते हैं। इसलिए एनकाउन्टर गैर कानूनी होते हुए भी वक्त की आवश्यकता है। माफिया ब्रदर्स और आतंकवादी में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। उद्देश्य जरूर अलग-अलग है परन्तु आम आदमी की जान की कीमत दोनों के लिए कुछ भी नहीं है। एक हमारे सिस्टम का पाट बनकर वार करता है और दूसरा सिस्टम के बाहर रह कर मारता है। इसलिए दोनों से निपटने का रास्ता एक ही है- एनकाउन्टर। दुनियाँ का सबसे पुराना प्रजातान्त्रिक मुल्क अमरीका को भी लादेन से निपटने के लिए इसी हथियार को काम में लेना पड़ा था।

उत्तर प्रदेश में पिछले छः वर्षों में विकास दुबे, अरबाज, विजय चौधरी,

शकील, असद अहमद, गुलाम, गौरी यादव, मनीष सिंह जैसे 183 कुख्यात वॉटेड अपराधियों को एनकाउन्टर के हथियार से ही मार गिराया। एनकाउन्टर असली हो या नकली, लादेन का हो या अतीक के बेटे असद का या फिर विकास दुबे का, फाईनली एनकाउन्टर आवश्यक है। इन पापियों के लिए नीति, नियम, धर्म, मर्यादा, न्यायालय की बात करने का समय समाप्त हो चुका है। याद रहे मानवाधिकार मानव के लिए होते हैं, दानव के लिए नहीं। पूर्णतया अनैतिक एवं गैरकानूनी मार्ग पर चलने वाले से नैतिकता एवं कानूनी तरीके से नहीं निपटा जा सकता है।

दोस्तों, यह नया भारत है जो समस्याओं को टालता नहीं है, समस्याओं से टकराना जानता है, उन्हें मिटाना जानता है। गंगा-यमुना की पावन भूमि की परिव्रता तथा ऋषि-मुनियों की कर्मस्थली की मर्यादा के लिए हमें भी भगवान श्री कृष्ण के संदेश के अनुरूप सोच बनानी होगी।

-प्रो. कैलाश सोडानी,
कुलपति, वर्धमान महावीर
खुला विश्वविद्यालय, कोटा

ग्रामीण क्षेत्र में गर्मी का असर, तालाब सूखने से वन्य जीवों के लिए पानी की समस्या बढ़ी

रानीवाड़ा, (नि.सं.)। जालोर जिले के रानीवाड़ा क्षेत्र में पहाड़ी वन्य क्षेत्रों सहित कई गाँवों में तालाब के सूख जाने से बेसहारा और वन्य जीवों के लिए पीने के पानी की समस्या देखने को मिल रही है। ऐसे में कई समाजसेवी टांकों सहित अवाड़ों में टैकरो से पानी डलवा रहे हैं। सिलासन ग्राम पंचायत के रामपुरा में किसान ने अपने कुएं से पाइप लाइन डालकर तालाब को भरने का मुश्किल भरा कार्य करने का ठाना है। तालाब भरने का कार्य जारी है।

बात रानीवाड़ा निवासी हाल रामपुरा सज्जनसिंह अदाणी की कर रहे हैं। इनके कृषि कुएं के पास तालाब आया हुआ है। रामपुरा गांव में बेसहारा पशुओं सहित पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण वन्य जीवों की तादाद इसी तालाब के पानी पर गर्मियों का मौसम गुजारीती है। ऐसे में इस बार तालाब के गर्मी आते ही सूखने से मुक पशुओं के सामने पेयजल संकट खड़ा हो गया। ऐसे में सज्जनसिंह ने स्वविवेक से अपने कुएं के पानी को पाइपलाइन के जरिए तालाब में छोड़ दिया।

ग्रामीणों ने सज्जनसिंह के प्रयासों की सराहना करते हुए दूसरे किसानों को भी उनसे प्रेरणा लेकर मुक जीवों को बचाने के लिए सामने आने का आह्वान किया है, ताकि प्यास की वजह से किसी मासूम जीव की मौत



सिलासन ग्राम पंचायत के रामपुरा में किसान सज्जनसिंह अदाणी ने अपने कुएं से पाइप लाइन डालकर तालाब को भरने का कार्य किया।

न हो। दरअसल भीषण गर्मी के इस दौर में तालाब सूख चुके हैं और वन्य जीव पानी के लिए भटक रहे हैं। पानी नहीं मिलने से वे भटक कर रिहायशी इलाकों की तरफ आते हैं और कुत्तों का शिकार बनते हैं या सड़क एक्सिडेंट

में बेमौत मारे जाते हैं। नर्मदा का पानी अपर्याप्त आपूर्ति होने से और पीएचडी महकमा की ओस से इस ओर कोई ध्यान नहीं देने के बाद ग्रामीण और वन्यजीव प्रेमी खुद आगे आए हैं और सूखे तालाबों और पानी की

खोलियों को भर रहे हैं सूखे तालाबों को भर रहे हैं।

जलाराम धाम के संचालक सज्जनसिंह ने बताया कि पशुओं और वन्यजीव वाले सिलासन, तावींदर, सोमेरा पर्वतीय क्षेत्र पानी के अभाव से

- रामपुरा में किसान सज्जनसिंह अदाणी का बेहतरीन प्रयास
- किसान ने कुएं से तालाब भरना किया शुरू, 15 दिन का पानी किया स्टॉक

परेशान वन्यजीवों के लिए आफत भरा अप्रैल महीना पूरा बीत जाने के बाद भी वन विभाग, राज्य सरकार और जनप्रतिनिधियों का रवैया अब तक वन्यजीवों के प्रति उदासीन ही रहा है। इस भीषण गर्मी में प्राकृतिक जलस्रोत, खोलियाँ, नाडे-नाडियाँ और तालाब सूखे हैं। ऐसे में बेसहारा बेजुबान पशुओं का कोई धणी धोरी नहीं है।

उन्होंने बताया कि कई जगह हालात तो इतने बदतर हैं कि वन्यजीव और मवेशी पानी के अभाव में दम तक तोड़ रहे हैं। इलाके के वडेटा, लाखावास, प्रागढ, तावींदर, कुडी, दांतवाड़ा सहित कई वन्य जीव इलाकों में जलसंकट है। ऐसे में वन्यजीव प्रेमी और ग्रामीण आगे आए हैं और सूखे तालाबों में पानी भर रहे हैं। ताकि वन्य जीवों और पशुओं को पानी मिल सके और उनको भटकना नहीं पड़े।

महंगाई राहत कैम्प के दूसरे दिन ही लोगों का रुझान टूटा

सांभरझील, (नि.सं।) यहां पालिका प्रशासन की ओर से पुरानी धानमंडी स्थित सराय स्कूल में वाई एक और दो के लिए संयुक्त रूप से लगाए जा रहे महंगाई राहत कैम्प के दूसरे रोज से ही लोगों के आने का सिलसिला थम गया।

स्कूल परिसर के खाली मैदान में टेंट तानकर लगाए गए राहत शिविर में आज पूरे दिन अलग-अलग विभाग के कर्मचारियों के पास काम कराने वाले इक्का-दुक्का लोग ही नजर आए। ज्यादातर लोग ऐसे भी थे जो शिविर का जायजा लेने के लिए ही आए थे। कर्मचारी अधिकांश समय खाली बैठे रहे और शिविर समाप्त तक उनका टाइम पास होना भी मुश्किल हो गया। ऐसे हालात में कुछ कर्मचारी कूलर की हवा में सुस्ताते भी रहे। अधिशाषी अधिकारी हरिनारायण यादव से इसका

कारण पूछा तो बताया कि शिविर के प्रथम रोज वाई संख्या 1 और 2 के अधिकांश लोग अपने कामों के लिए आए थे और उनको नियम अनुसार शिविर में जो लाभ मिलना चाहिए था वह दिया गया है हो सकता है इसी वजह से आज लोग कम आए हैं।

कुछ लोगों का कहना है कि सरकार की ओर से इन शिविरों का लगाए जाने का कोई औचित्य नहीं है क्योंकि सरकार के पास व समस्त आंकड़े मौजूद पहले से ही हैं जो सरकार शिविर में पंजीयन के जरिए इकट्ठा करना चाहती है। कुछ जन प्रतिनिधियों ने यह भी बताया कि 2 माह तक लगातार शिविर आयोजित होने की वजह से नगरपालिका के कई महत्वपूर्ण कार्य एक प्रकार से टप हो जाएँगे जो विकास में प्रमुख रूप से भूमिका निभाते हैं।



महंगाई राहत कैम्प में कर्मचारी अधिकांश समय खाली बैठे दिखाई पड़े।

राशिफल बुधवार 26 अप्रैल, 2023



पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2080, पुनर्वसु नक्षत्र गुरुवार प्रातः 6:59 तक, सुकर्मा योग प्रातः 8:05 तक, तैतिल करण दिन 11:28 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 12:18 से कर्क राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मिथुन, बुध-मेघ, गुरु-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।
आज कुमार योग दिन 11:28 पर समाप्त होगा। आज चन्दन छोट, गंगा सप्तमी, गंगोत्पत्ति, गंगा पूजन है।
सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:11 से 2:03 तक, शुभ 10:46 से 12:26 तक, चर 3:40 से 5:17 तक, लाभ 5:17 से सूर्यास्त तक।
राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:57, सूर्यास्त 6:53

मेघ
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नौकरोंपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले सुखसंदेश प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

मिथुन
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संपादित नौकर से धन प्राप्त होगा।

कर्क
व्यक्तिगत परिणामों के कारण मानसिक तनाव और मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित परिणामी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संपादित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परिणामी हो सकती है।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हार्मोनिकता का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। महत्वपूर्ण योजना बनेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।